International Theatre Institute
World Organization for the Performing Arts
Indian Centre of ITI

IAPAR
INTERNATIONAL ASSOCIATION FOR PERFORMING ARTS AND RESEARCH

विश्व रंगमंच दिवस
२७ मार्च २०२२

साथियों,

जैसा की हर दिन, हर घण्टे, हर मिनट की रिसती खबरों पर आज दुनिया टंग–सी गई है। क्या मैं आप सबको एक सृजनकर्ता की हैसियत से अपनी पूरी सम्भावना, अभिरुचि और सही दृष्टिकोण के साथ काल के उस विशाल और बहुआयामी खण्ड में, महान बदलाव के खण्ड में पूरी सतर्कता, सावधानी और विशाल दृष्टि के साथ प्रवेश करने के लिए आमंत्रित कर सकता हूँ?

आज हम मानव इतिहास के उस काल खण्ड में जी रहे हैं, जहाँ मानव जाति का स्वयं के साथ, एक का दूसरे के साथ सम्बन्धों में, यहाँ तक कि मानव समाज के बाहर की दुनिया के साथ उसके सम्बन्धों में बहुत गहराई के साथ परिणामी बदलाव अनुभव कर पा रहे हैं। उस तक अपनी पहुँच बना पाना, उसे कह पाना, उसे व्यक्त कर पाना निरन्तर हमारे बस के बाहर होता जा रहा है।

हम चौबीसो घण्टे चलने वाली खबरों के चक्र में नहीं, बल्कि ज़िन्दगी की दहलीज़ पर खड़े जी रहे हैं। अख़बार, रेडियो और टेलीविज़न हमारे अनुभवों को अभिव्यक्त कर पाने में पूरी तरह अक्षम और असमर्थ हैं।

भाषा कहाँ है, क्या करना है, हमारे पास क्या वैसे बिम्ब और प्रतीक हैं, जो गहरे परिवर्तन और उससे पैदा हुए दरार के हमारे अनुभवों को पाट सकें? हम अपने जीवन के विषय को उसे सूचना बनाए बिना अनुभव के स्तर पर अभिव्यक्त कर पाए?

रंगमंच अभिव्यक्ति का माध्मय है।

जब प्रेस द्वारा योजना बनाकर एक अभियान–सा चलाया जा रहा हो, सच जैसे दिखने वाले आभाषी भ्रम पैदा किए जा रहे हों, और हम क्षति पहुँचाने वाली पूर्व की सूचनाओं से अभीभूत हुए जा रहे हों, ऐसे में हम कैसे अंकों के अन्तहीन दोहराव और तीन–पाँच से निकल संवेदना के उस स्तर को छू पाएं, जिसमें इस जीवन का असीमित सच छिपा हो, जिसकी अपनी एक परिस्थितिकी हो, जहाँ मित्र हों, जिसमें अन्जाने क्षितिज को भी देख पाने भर प्रकाश हो? दो साल के कोविड–19 ने हमारे अनुभव क्षमता को मध्यम कर दिया है। लोगों के जीवन सिकुड़ गए हैं, सम्पर्क टूटे पड़े हैं और हम मानव बस्ती के विचित्र से ग्राउंड जीरो पर ला खड़े कर दिए गए हैं।

AVARTAN, 5 HILL VIEW SOCIETY, 46/4 ERANDAWANE, PAUD ROAD, PUNE, MAHARASHTRA 411038
Email: iapar.india@gmail.com

इन वर्षों में अपनी धरती में किस क़िस्म के बीज डालने हैं, और कौन–से पौधे लगाने हैं, वो कौन–से और किस प्रजाति के पौधे हैं, जो बेढंगे और आक्रामक तरीक़े से बढ़ आए हैं, जिन्हें हमेशा–हमेशा के लिए जड़ों से उखाड़ फेंकने की ज़रूरत है? कितने लोगों का जीवन कगार पर आ खड़ा हुआ है, अचानक से बिना मतलब कितनी हिंसा व्याप्त हो गई है, कितनी सारी स्थापित संस्थाएँ इस चल रही हिंसा के संस्थान बन गए हैं? हमारी यादों की ख़ुशियाँ आज कहाँ हैं? हमें किन चीज़ों को याद करने की ज़रूरत है, और वो कौन–से अनुष्ठान हैं, जिसके माध्यम से हम उन क़दमों को उठाने की कल्पना कर सकें, जो अब तक उठाए ही नहीं गए।

विशाल दृष्टि और उद्देश्य वाले रंगमंच को आज पुनर्स्थापित करने, उसकी क्षति पूर्ति और देखभाल करने के लिए एक नए अनुष्ठान की आवश्यकता है। हमें हमारे जी–बहलाव की ज़रूरत नहीं है। हमें संगठित और इकट्ठे होने की ज़रूरत है, हमें स्वयं को साझा करने और साझे को सिंचित कर कुछ मतलब का सृजित करने का प्रयास करना चाहिए। हमें एक ऐसे सुरक्षित स्थान की ज़रूरत है, जहाँ लोग पूरे ध्यान और बराबरी के भाव से एक–दूसरे को सुन सकें।

रंगमंच पृथ्वी लोक की एक ऐसी रचना है, जहाँ मानव, देवता, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, बारिश की बूंदें, आँसू और पुनर्जनन सब एक समय में, एक स्थान पर समानता के धरातल पर इकट्ठे हो पाते हैं। समानता और एक–दूसरे को सुन सकने वाली रंगमंच की भूमि अपने इसी अंतः प्रकाश से जगमगा उठती है और जो ख़तरनाक समय में भी अपने धीरज, विवेक, क्रिया कलाप और धैर्य के साथ अपने सम्प्रेषण और आदान–प्रदान के कारण जीवित बनी रहती है।

फ्लावर ऑरनामेण्ट सूत्र में भगवान बुद्ध ने मानव जीवन में धीरज के दस प्रकारों का ज़िक्र किया है। उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण धीरज है, वह यह कि जो भी उसे ऐसे समझो, जैसे वह मरीचिका हो। रंगमंच ने जीवन को हमेशा एक मरीचिका की तरह ही प्रस्तुत किया है, जो हमें इस योग्य बनाता है कि हम मानव को उसके भ्रम, अन्धापन, नकार से परे उन्मुक्तता और स्पष्टता के साथ देख पाएँ।

आज हम जो देख रहे हैं, जिस प्रकार से देख रहे हैं, उसे लेकर हम इतने पक्के हो गए हैं कि हम यथार्थ के अन्य विकल्प, नई सम्भावना, अलग तौर–तरीक़े, न दिखाई देने वाले सम्बन्धों और कालातीत जुड़ाव को देख पाने में अक्षम हो गए हैं।

यह समय है, जब हम अपने दिमाग़, अपनी अनुभूति, अपनी कल्पनाओं, अपने इतिहास और अपने भविष्य को नई ताजगी से भर दें। यह काम अकेले व्यक्ति द्वारा, अकेले में नहीं किया जा सकता। यह ऐसा काम है, जिसे हम सबको मिलाकर करने की ज़रूरत है। रंगमंच आपको आमंत्रित करता है कि आइए, हम मिलकर इस दिशा में काम करें।

दिल की गहराइयों से आपका, आपके काम को धन्यवाद।

– पीटर सेलर्स

Translated in Hindi by:

Asif Ali
NSD Alumni
Playwright and Theatre Practitioner